

TRIK. 2, 6, 7. H. 586. HALĀJ. 2, 349. 1, 99. पितरं च दशैयं मातरं च RV. 1, 24, 1. किर्यत्स्विदन्द्वा अर्थ्येति मातुः किर्यत्पितृर्नितुयो ज्ञानं 4, 17, 12. पितेव पुत्रान्प्रति नो जुषस्व 7, 54, 2. TS. 2, 6, 1, 6. अग्निर्ज्ञरः पिता नः RV. 5, 4, 2. 6, 52, 6. अन्वेनं माता मन्यतामनु पिता des Opferthiers AIR. BR. 2, 6. ÇAT. BR. 14, 7, 1, 22. भुवनस्य RV. 6, 49, 10. यज्ञानाम् 3, 3, 4. उपाध्या-
यान्द्राचार्यं आचार्याणां शतं पिता । सहस्रं तु पितृन्माता गौरवेणातिरि-
च्यते ॥ M. 2, 145. fgg. 170. 171. N. 10, 1. अपितरु nicht-Vater ÇAT. BR. 14, 7, 1, 22. Vater heisst Bṛhaspati RV. 4, 50, 6. 6, 71, 1. Varuṇa 7, 52, 3. Pragāpati ÇAT. BR. 1, 5, 1, 2. 14, 4, 1, 1. ÇĀÑKH. ÇR. 14, 7, 4. be-
sonders der Himmel: द्यौष्पिता RV. 6, 31, 5. 70, 6. AV. 2, 28, 4. 3, 9, 1. यदंशुः पितरं मातरं च zwischen Himmel und Erde RV. 10, 88, 15. TBR. 2, 7, 10, 3. ÇAT. BR. 1, 8, 1, 41. — 2) du. die Eltern P. 1, 2, 70. AK. 2, 6, 1, 37. H. 360. RV. 1, 20, 4. 160, 3. अमाञ्जूरिव पित्रोः सचां सती 2, 17, 7. 3, 33, 2. 7, 67, 1. VS. 19, 11. KĀTH. 23, 10. JĀĒN. 2, 117. SĀV. 5, 99. DAÇ. 2, 4. ÇĀK. 109, 9. RAGH. 1, 1. KATHĀS. 29, 30. 39, 243. SPR. 705. BHĀG. P. 1, 12, 22. मातरां पितरां RV. 4, 6, 7. VS. 9, 19. पितरां मातरां ved. P. 6, 3, 33. die Eltern des Agni sind die Hölzer RV. 1, 31, 4. 3, 5, 8. 6, 7, 4. 5. Him-
mel und Erde — die Eltern der Geschöpfe 1, 124, 5. 3, 3, 11. 7, 53, 2. मातापितरौ s. bes. — 3) pl. a) die Väter: ये वै देवाः पितरो ये च पुत्राः AV. 1, 30, 2. RV. 4, 1, 13. 2, 16. 42, 8. M. 2, 145. येनास्य पितरो याता येन याता पितामहाः । तेन यायात्सतो मार्गम् 4, 178. ÇĀK. 71. प्रज्ञानाम् BHĀG. P. 6, 2, 3. Väter der Soma-Steine sind die Berge RV. 10, 94, 12. — b) der Vater und seine Brüder, Vater und Onkel, des Vaters Verwandtschaft H. 539. अद्यापयामास पितृन् शिशुराङ्गिरसः कविः । पुत्रका इति क्वावाच जनेन परिगृह्य तान् ॥ M. 2. 151. न धातरो न पितरः पुत्रा रि-
क्यक्षराः पितुः 9, 135. R. 1, 42, 2. 6. 8. 12. KATHĀS. 3, 41. 54. — c) die Väter so v. a. die Geister der Vorfahren, die Manen NIR. 11, 17. TRIK. 1, 1, 6. देवाः पितरो मनुष्याः AV. 10, 6, 32. 9, 9. 10, 26. 9, 2, 19. 11, 1, 5. 18, 2, 49. RV. 6, 52, 4. 7, 33, 12. 10, 14—16. 68, 11. 88, 15. VS. 5, 11. 8, 58. 60. TS. 1, 8, 5, 1. Soma mit den Vätern RV. 8, 48, 12. 13. TBR. 2, 1, 1, 1. मासि पितृभ्यः क्रियते 1, 4, 9, 1. AIR. BR. 3, 15. 7, 23. 34. ÇAT. BR. 1, 7, 1, 2. 6, 1, 9. 3, 6, 1, 25. पाणिमुखाः पितरः ऀÇV. GRHJ. 4, 7. KAÇV. 1. der Auf-
enthaltort (लोका) der Väter AV. 3, 29, 4. 12, 2, 9. 45. 18, 3, 73. तृतीये लोके पितरः KĀTH. 36, 12. देवाः पितरः, मनुष्याः पितरः TBR. 1, 3, 10, 4. अर्चयेत — पितृन् अद्भिः M. 3, 81. अक्रोधनाः शौचयराः सततं ब्रह्मचारिणाः ।
न्यस्तशस्त्रा मरुभागाः पितरः पूर्वदेवताः ॥ 192. fgg. ऋषिभ्यः पितरो ज्ञा-
ताः पितृभ्यो देवदानवाः 201. पितृणां च गणान्विद्धि सप्त वै पुरुषर्षभ । मूर्-
तिमत्तो वै चत्वारस्त्रयश्चाप्यशरीरिणाः ॥ MBH. 2, 461. fgg. पितृणां कृष्य-
वाडमि 13, 916. यमः पितृणामधिपः 14, 1176. पितृणामर्षभा चास्मि BHĀG. 10, 29. HARIV. 836. fgg. R. 1, 2, 11. 6, 17. ÇĀK. 152. RAGH. 2, 16. 3, 20. VP. 40. 226. Regenten des Nakshatra Maghā VARĀH. BRH. S. 98, 1. WEBER, NAX. 2, 300. 371. ĠJOR. 94. des Nakshatra Mūla WEBER, NAX. 2, 374. 379. — 4) superl.: पितृत्तमः पितृणाम् der beste unter den Vätern RV. 4, 17, 17. — Vgl. जीव°, दत्त°, राज°.

पितरिभ्यः (पि°, loc. von पितरु + प्ररु) m. ein Held dem Vater ge-
genüber, ein feiger Praher gaṇa पात्रेसामितादि zu P. 2, 1, 48 und युक्ता-
रेष्वादि zu 6, 2, 81.

पितापुत्रं (पिता, nom. von पितरु, + पुत्र) m. du. Vater und Sohn P.

6, 3, 25. VĀRTT. VOR. 6, 5. AV. 6, 112, 2. ÇAT. BR. 13, 2, 1, 4. M. 2, 135. MBH. 6, 2693. RĀGA-TAR. 1, 193. BHĀG. P. 5, 1, 9. पितापुत्रविरोध ein Streit zwischen Vater und Sohn JĀĒN. 2, 239. संवाद MĀRK. P. 10 in der Unter-
schr. समागम Titel eines buddh. Sūtra WASSILJEV 299. पितु° VJUTP. 41.

पितापुत्रीय (vom vorang.) adj. Vater und Sohn betreffend: संप्रदान die Uebergabe (der leiblichen Fähigkeiten und Kräfte) durch den Vater an seinen Sohn IND. ST. 1, 408. die Worte पितरु und पुत्र enthalten ANU-
PADA 8, 2.

पितामहं (पिता, nom. von पितरु, + मह) 1) m. a) Grossvater väter-
licher Seite P. 4, 2, 36. VĀRTT. 2. AK. 2, 6, 1, 33. H. 537. an. 4, 340. MED. h. 33. AV. 5, 5, 1. 9, 5, 30. 11, 1, 19. 18, 4, 35. VS. 19, 36. TS. 1, 8, 5, 1. 7, 2, 7, 3. ÇAT. BR. 5, 4, 5, 4. 14, 9, 1, 11. ऀÇV. GRHJ. 4, 7. GRHJASĀṬĒGA. 2, 97. M. 3, 221. 222. 3, 284. 4, 178. BRĀHMAṆ. 3, 6. कुरुवृद्धः पितामहः d. i. Bhishma BHĀG. 1, 12. तृप्यात्ति दैतैरिह पितामहाः so v. a. Manen JĀĒN. 1, 258. 269. Vgl. damit महं पित्रे RV. 1, 71, 5. 6, 20, 11, für welches übri-
gens in der ersten Stelle die Bedeutung Grossvater nicht passt und auch in der zweiten schwerlich anzunehmen ist. — b) Bein. Brahman's AK. 1, 1, 1, 11. TRIK. 3, 3, 453. H. 211. H. an. MED. HALĀJ. 1, 7. SUND. 1, 17. 3, 2. A.Ā. 8, 22. MBH. 1, 32. 13, 293. R. 1, 38, 9. 63, 20. VARĀH. BRH. S. 1, 4. 31, 5. KATUĀS. 2, 12. in buddh. Sūtra BURN. INTR. 131. Auch लोक-
R. 1, 2, 30. 37, 4. 6, 74, 35. सर्व° 1, 38, 5. 63, 18. M. 1, 9. SUND. 1, 18. सर्व-
भूत° MBH. 1, 2493. पितामहस्य सरः und पितामहसरस् n. N. eines Wall-
fahrtsortes 3, 8126. fg. Pitāmaḥ als Verfasser eines Gesetzbuchs IND. ST. 1, 233. eines astronomischen Lehrbuchs 2, 247. 252. — 2) f. die Grossmutter väterlicher Seite P. 4, 2, 36. VĀRTT. 3. gaṇa गौरादि zu P. 4, 1, 41. ĠĀTĀDH. im ÇKDR. VĀSA in DĀJABH. 112, 7. MBH. 14, 2602. fg. KATHĀS. 30, 23. RĀGA-TAR. 6, 115. fg. 327. BHĀG. P. 9, 24, 54. — Vgl. अ-
ति°, पूर्व°, प्र°.

पितुं (von पी, प्या) m. Saft, Trank, Nahrung überh. NAIGH. 2, 7. NIR. 9, 24. RV. 1, 187, 1. fgg. महः पितुं पीयिषो चार्त्तन्वा 61, 7. पित्वो भित्ति 152, 6. 5, 7, 6. यो नो हंसं दिप्सति पित्वः 7, 104, 10. 6, 20, 4. इषो हि पित्वो ऽवि-
षस्यं दावने 8, 25, 20. 32, 8. 10, 13, 3. य आधाय चक्रमानाय पित्वो ऽन्वा-
न्सन् (स्थिरं मनः कृणुते) 117, 2. 147, 5. VS. 2, 20. 12, 65. AV. 4, 6, 3. TS. 5, 7, 2, 4. n. AIR. BR. 1, 13.

पितुःपुत्र (पितरु, gen. von पितरु, + पुत्र) m. des Vaters Sohn P. 6, 3, 23, Sch.

पितुर्कृत् (पितु + कृत्) adj. Nahrung schaffend RV. 10, 76, 5.

पितुर्भाज (पितु + भाज्) adj. Nahrung genussend: नरश्च ये पितृभाजो व्यु-
ष्टौ RV. 1, 124, 12.

पितुर्भूत् (पितु + भूत्) adj. Nahrung bringend: पितृभूतो जनित्रिरन्वावृधं प्रति चरन्त्यनैः RV. 10, 1, 4. 172, 3.

पितुर्मत् (von पितु) adj. von Trank und Speise begleitet; nahrungs-
reich, während NIR. 6, 36. प्र मन्दिने पितुर्मदं चैता वचः RV. 1, 101, 1. पि-
तुमतीमूर्त्तम् 116, 8. सदा सुगः पितृमौ अस्तु पन्थाः 3, 54, 21. तपः 1, 144, 7. 5, 48, 4. सदा रूपवः पितृमतीव संसत् 4, 1, 8. AIR. BR. 1, 22. TBR. 2, 8, 1, 1.

पितुर्षणि (पितु + षणि) adj. Nahrung spendend: कित्त्विषस्पृत्पितृष-
णित्त्विषाम् RV. 10, 71, 11.

पितुःघस्र und पितुःस्वस्र (पितरु, gen. von पितरु, + स्व°) f. des